



## ॥ हनुमान् चालीसा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज  
निज मनु मुकुर सुधार।  
बरनऊँ रघुवर विमल यश  
जो दायकु फल चार॥

बुद्धिहीन तनु जानिके  
सुमिरौ पवनकुमार।  
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं  
हरहु कलेस विकार॥

### ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।  
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा।  
अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ २ ॥

महावीर विक्रम बजरङ्गी।  
कुमति निवार सुमति के सङ्गी॥ ३ ॥

कञ्चन बरन विराज सुवेसा।  
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा॥ ४ ॥

हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै।  
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५ ॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन।  
तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६ ॥

विद्यावान गुणी अति चातुर।  
राम काज करिबे को आतुर॥ ७ ॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।  
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।  
विकट रूप धरि लङ्क जरावा॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे।  
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥

लाय सजीवन लखन जियाये।  
श्रीरघुवीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

रघुपति कीन्ही बहुत बडाई।  
तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥ १२ ॥

सहस वदन तुम्हरो यश गावैं।  
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा।  
नारद शारद सहित अहीशा॥ १४ ॥

यम कुबेर दिक्पाल जहाँ ते।  
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।  
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

राम लक्ष्मण जानकी।  
जय बोलो हनुमान् की॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना।  
लङ्केश्वर भये सब जग जाना॥ १७ ॥

युग सहस्र योजन पर भानू।  
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥  
 प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।  
 जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९ ॥  
 दुर्गम काज जगत के जेते।  
 सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २० ॥  
 राम दुआरे तुम रखवारे।  
 होत न आझा बिन पैसारे॥ २१ ॥  
 सब सुख लहै तुम्हारी सरना।  
 तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२ ॥  
 आपन तेज सम्हारो आपै।  
 तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३ ॥  
 भूत पिशाच निकट नहिं आवै।  
 महावीर जब नाम सुनावै॥ २४ ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की॥  
 नाशै रोग हरै सब पीरा।  
 जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥ २५ ॥  
 सङ्कट से हनुमान् छुडावै।  
 मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥ २६ ॥  
 सब पर राम तपस्वी राजा।  
 तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७ ॥  
 और मनोरथ जो कोई लावै।  
 दासु अमित जीवन फल पावै॥ २८ ॥  
 चारों युग प्रताप तुम्हारा।  
 है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे।  
 असुर निकन्दन राम दुलारे॥ ३० ॥  
 अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।  
 अस बर दीन जानकी माता॥ ३१ ॥  
 राम रसायन तुम्हरे पासा।  
 सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२ ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की॥  
 तुम्हरे भजन राम को पावै।  
 जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥ ३३ ॥  
 अन्त काल रघुपति पुर जाई।  
 जहाँ जन्मि हरिभक्त कहाई॥ ३४ ॥  
 और देवता चित्त न धरई।  
 हनुमत सेई सर्व सुख करई॥ ३५ ॥  
 सङ्कट कटै मिटै सब पीरा।  
 जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥ ३६ ॥  
 जै जै जै हनुमान गोसाईं।  
 कृपा करहु गुरु देव की नाई॥ ३७ ॥  
 यह शत पार पाठ कर कोई।  
 छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८ ॥  
 यो यह पढ़ै हनुमान् चलीसा।  
 होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९ ॥  
 तुलसीदास सदा हरि चेरा।  
 कीजै नाथ हृदय मैं डेरा॥ ४० ॥  
 राम लक्ष्मण जानकी।  
 जय बोलो हनुमान् की॥

---

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman\\_Chalisa](http://stotrasamhita.net/wiki/Hanuman_Chalisa).



generated on **April 14, 2025**

Downloaded from <http://stotrasamhita.github.io> | StotraSamhita | [Credits](#)